



कुरिंजि



वर्ष - 2020

21वाँ अंक



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
“लेखापरीक्षा भवन”, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट,
“लेखापरीक्षा भवन”, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 600 018



हिंदी दिवस -2019 के अवसर पर हिंदी गृह पत्रिका "कुंजि" के 20 वें अंक का विमोचन करते हुए अधिकारीगण



वर्ष 2018 -19 के लिए आई.एस.टी.सी अनुभाग की ओर से राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन का शील्ड प्राप्त करती हुई श्रीमती. दीपना गोकुलराम, वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन

कुरिंजि परिवार

मुख्य संरक्षक	विश्वनाथ सिंह जादौन महालेखाकार
मार्गदर्शक	जी.राजेन्द्रन वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
सलाहकार	पी.असोकन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
संपादक मंडल	वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी

अंक	इक्कीसवाँ
प्रकाशक	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
प्रतियाँ	एक सौ
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा

टिप्पणी - संपादक मंडल को पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी है ।

चित्रकार - कुरींजी पत्रिका के इस अंक को श्री संजीव कुमार गिरी, डी.ई.ओ ने अपने चित्रो सुशोभित किया हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना के नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का संदेश		5
2.	संपादक की कलम से		6
3.	पिताजी और मेरा बचपन	शुभम रस्तोगी, व.ले.प	7
4.	यादगार सफर	संजीव कुमार गिरि, डी.ई.ओ.	9
5.	सम्मान करो	संजीव कुमार गिरि, डी.ई.ओ.	13
6.	कृष्ण-अर्जुन संवाद	खुशबू कुमारी, डी.ई.ओ.	14
7.	कुछ अदभुत तथ्य	खुशबू कुमारी, डी.ई.ओ.	15
8.	ग्लोबल वार्मिंग	दिनेश चंद मीना,	16
9.	जीवन का वित्तीय विवरण	वी. रुकमणि, व.ले.प.	19
10.	कोविड-19 का एक निम्न मध्यम वर्गिय परिवार पर प्रभाव	सुधीर बर्णवाल, डी.ई.ओ.	20
11.	कोरोनावायरस से जुड़े सवाल और उनके जवाब, जिन्हें जानना आपके लिए बेहद जरूरी	वी. राधा, व.लेखापरिक्षक	21
12.	चुटकुले	वी. राधा, व.लेखापरिक्षक	26
13.	नई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें	वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी	28
14.	इंटरनेट	पी.असोकन, व.लेप.अ	33
15.	नई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें	वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी	28
16.	कल्याण एवं खेल-कूद गतिविधियाँ - 2017-18	कल्याण कक्ष	39



संरक्षक का संदेश

प्रति वर्ष भाँति की इस वर्ष भी इस कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का इक्कीसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिये किये जा रहे सुप्रयासों में विभागीय पत्रिकाओं का सदैव विशिष्ट स्थान रहा है। हिंदी भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के माध्यम बनने के साथ-साथ ये राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने की मनोभावना को उजागर करती हैं।

यह गृह-पत्रिका हिंदी की विकास यात्रा को गति प्रदान करने में यथासंभव योगदान दे रही है जिसके लिए मैं उन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से "कुरिंजि" एक सफल गृह पत्रिका का रूप ले सकी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "कुरिंजि" का यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति हिंदी के विकास एवं प्रचार - प्रसार की दिशा में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। पत्रिका की अनवरत प्रकाशन और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

विश्वनाथ

विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II)

संपादक की कलम से

इस कार्यालय की गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का उन्नीसवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है। पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है जिससे अनेक छिपी प्रतिभाएँ परिलक्षित हुई हैं एवं विभिन्न विषयों एवं पहलुओं पर सरल और सुबोध रूप से अपना विचार व्यक्त किया गया है।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को उत्तरोत्तर विकासोन्मुखी दिशा प्रदर्शित करती हुई अपनी अनवरत् साहित्यिक यात्रा पर 21वें अंक की ओर अग्रसर है, इसके लिए हम आभारी हैं। आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही यह संभव हो सका है। कार्य की निरंतरता अपने आप में सफलता का प्रतीक है। हमें पूरी आस्था है कि हम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे क्योंकि कवि कहते हैं कि "कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती है।"

हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ लेख, कहानी, व्यंग्य तथा सारगर्भित विषयों पर कविताएँ इस अंक के आकर्षण हैं। मैं इस अंक में योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों को आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही, अनुरोध करती हूँ कि पाठकवृंद पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें प्रेरित करें ताकि हम आपके सुझावों/प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान देकर आगामी अंकों में पत्रिका को अति उपयोगी एवं कारगर बना सकें।

आशा है पाठकों को पत्रिका रुचिकर लगेगी एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह "कुरिंजि" को मिलता रहेगा।

वी.चित्रा,
हिंदी अधिकारी

पिताजी और मेरा बचपन

हमारे जीवन में हम अनेकों प्रतिभाशाली व्यक्तियों से मिलते हैं, प्रत्येक व्यक्ति हमें कुछ न कुछ सीखने में मदद करता है, कुछ व्यक्तियों का प्रभाव हमारे जीवन पर कम तथा कुछ व्यक्तियों का प्रभाव ज्यादा रहता है। ऐसे ही मेरे पिताजी का प्रभाव मेरे जीवन पर बहुत अधिक रहा। पिताजी ने मुझे बचपन से ही अल्प-संसाधनों में भी आत्मसम्मान एवं आत्मसंतुष्टि की सर्वोपरि भावना मेरे व्यवहार में सिंचित की। मुझे स्मरित स्मरण है वह समय जब शाम को बिजली चली जाया करती और मैं पिताजी का दुकान से आने का इंतजार करता, पिताजी की साइकिल की घंटी सुनते ही मैं दौड़ता और जब वे साइकिल से उतरते तो मैं अपने छोटे हाथों को पिताजी के दाहिनी जेब में घुसा देता तथा व्यवस्थित रखे नोटों को दरकिनार करते हुए जेब की तली में छिपे सिक्के निकालता और बहुत खुश होता किसी रोज सिक्के न मिलने पर यदि पिताजी दस रुपये का नोट देने का प्रस्ताव देते तो मैं साफ मना कर देता भला बड़ी रकम को संभालने की जिम्मेदारी मैं अपने छोटे कंधों पर क्यों लूँ।

पिताजी ने स्वयं को व्यसनों से दूर रखा तथा मुझे सिखाया कि किस प्रकार कोई व्यक्ति व्यसनों पर खर्च न करके अपने पूरे परिवार के लिए सेहतमंद वस्तुएँ खरीद सकता है।

जब छठवीं कक्षा में मेरा दाखिला एक सरकारी विद्यालय में हुआ तो पिताजी ने समझाया कि किसी भी प्रकार का जातिगत भेदभाव हमें अपने जीवन में नहीं करना चाहिए, प्रत्येक व्यक्ति जो अपने आस-पास सफाई रखे वह चाहे किसी भी जाति, संप्रदाय का हो, मित्रता करने योग्य होता है।

पिताजी ने घर में विचारों में असहमति व्यक्त करना भी सिखाया, वैचारिक मतभेदों पर स्वस्थ बहस होती तथा उससे निकलने वाले परिणाम परिवार को आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हुए।

पिताजी ने छोटी-छोटी चीजों से खुशियाँ निकालना सिखाया किस प्रकार गुजरती रेलगाड़ियों को देखने के लिए रुकना, पेड़-पौधों, फूलों के स्वरूप को बारिकी से देखना, हजारों फीट ऊपर उड़ती चीलों को, लाखों प्रकाश वर्ष दूर जगमगाते तारों को देखकर हतप्रभ महसूस करना सभी पिताजी ने सिखाया।

कभी-कभी जब भौतिकवादी समाज में आस-पास लोगों की उपरोक्त क्रिया कलापों में अरुचि देखता हूँ तो लगता है कि मानों मेरा ही बचपन अब तक नहीं गया शायद मुझे ही समाज के साथ बदलना चाहिए परन्तु पिताजी द्वारा सींची गई बचपन की ये जड़े गहरी प्रतीत होती हैं जिनसे स्वतंत्र होने का मन नहीं होता। आज भी जब मैं परिवार से मिलता हूँ वो दाहिनी जेब से सिक्के निकाल लेता हूँ। जीवन बचपन में ही निकल रहा है।

शुभम रस्तोगी,
वरि.लेखापरिक्षक



यादगार सफर

यात्रा वृतान्त का मतलब हम सभी अपने-अपने तरीके से समझते हैं। जैसे कुछ लोगो के लिए घूमना मतलब बैग पैक किये, निकल लिये घूमने फोटो खीचें और लौट आयें, वहीं कुछ लोग इन कामों के अलावा उस स्थान के बारे में समझने का प्रयास करते हैं, और उन्हें जो भी अनुभव या सीख मिलती है, उसे लिखते भी हैं। कुछ लोग तो इतने सुंदर तरह से लिखते हैं कि मानो उस लेख को पढ़ते-पढ़ते उस स्थान का मानसिक विचरण करते हुए उनकी यात्रा का एक हिस्सा बन जाते हैं।

मैं कोई लेखक नहीं हूँ, लेकिन कई लेखकों और साहित्य को अपने जीवन का हिस्सा बनाने का कोशिश करता हूँ। मेरी कोशिश रहेगी की अपने इस यात्रा वृतान्त में स्थान की सही जानकारी के साथ-साथ व्यक्तिगत अनुभव, स्थान की सही जानकारी लिखूँ जिससे ये लेख आप सब के लिए रोचक और लाभदायक हो।

हमने अपनी यात्रा चेन्नई से श्री वेकंठेश्वर बालाजी (तिरुपती) के लिए आरंभ की। हमने कहने से तात्पर्य हमारे चार साथियों से है, जो इस यात्रा में आगे शामिल होने वाले थे। सर्वप्रथम मैं अपने साथियों का परिचय बता दूँ, क्योंकि इससे पहले लगभग हमारी बातें फोन पर होती थी या इन लोगों के बारे में सोशल मिडिया, समाचारों के बारे में जानकारी मिलती थी। इस यात्रा में हम चार दिव्यांग थे, विजय सारथी (भारत का पहला व्हीलचेयर रेसर और एथलेटिक), एस तिरूमलई कुमार (भारत का पहला पैरा स्वीमर, एथलेटिक और तिरंदाज इन्होंने 6 बार लगातार एशियन गेम्स और अन्य अंतरराष्ट्रीय खेल में भाग ले कर कई मेडल जीते), मणिकंडन (व्हीलचेयर रेसर और डांसर), और मैं (संजीव कुमार गिरी - पैरा पिस्टल सूटर और आर्टिस्ट) ।

फिलहाल मैं और विजय सारथी चेन्नई से अपनी स्कूटी (स्पोर्टिंग व्हील) द्वारा यात्रा आरंभ किये। कोरोना के कारण सड़क पर ट्रैफिक कम था। हमारा पहला हमारा पहला पड़ाव तिरुतनी था, वहां मणिकंडन के गाँव एक रात ठहर कर उसके साथ रेनीगुंटा जाना था जहाँ से तिरूमलई अन्ना को साथ लेना था जो कि विजयवाड़ा से रेलगाड़ी द्वारा आ रहे थे।

तिरूमलई अन्ना से ये मेरी पहली मुलाकात थी। भारत के वरिष्ठ पैरा खिलाड़ी से मिलकर बहुत अच्छा लगा। सब साथ होने के बाद हमने रेनीगुंटा से तिरुपती की यात्रा शुरू

किया। तिरूमती से अब तिरूमला की चढ़ाई शुरू करनी थी जो करीब 17 किलोमीटर था। चेकपोस्ट पर हमें पहली समस्या का सामना करना पड़ा। चूँकि हम चारों दिव्यांग थे और हमारे स्कूटी में स्पोर्टिंग व्हील लगा हुआ था इसलिए सुरक्षाकर्मी ने हमें आगे जाने की इजाजत देने से मना कर दिया। थोड़ी देर के लिए लगा कि सब मेहनत बेकार हो गयी, लेकिन हम सब भी ठहरे मजबूत इरादे वाले पैरा- खिलाड़ी ऐसे तो सहजता से हार स्वीकार नहीं कर सकते थे। इसलिए तिरूमलई अन्ना और विजय सारथी ने अधिकारी से मिल कर इजाजत लेने की कोशिश की, पर सफल न हो सके। आखिर में हम लोगो ने उस चेकपोस्ट के सबसे बड़े अधिकारी से सीधे संपर्क किया। अन्ना ने अपने सभी लोगो के खेल क्षेत्र और कितनी दूर से आये इसका वर्णन करते हुए उनसे अनुमति प्रदान करने का अनुरोध किया। हमारी बातें समझकर उस अधिकारी ने न सिर्फ हमें अनुमति दी बल्कि हमें आगामी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में जीत के लिए शुभकामनाएँ भी दी। अब हमने तिरूमला की चढ़ाई शुरू की। यह मेरी चौथी तिरूमला यात्रा थी पर बहुत ही खास था पिछली सभी यात्रा मैंने पब्लिक ट्रांसपोर्ट से की थी। पहले जब भी बस या जीप में बैठा इस अद्भूत नजारा को देखता तो मन में इच्छा होती काश थोड़ी देर तक रुक कर इस दृश्य का आनंद लेते हुए इसे अपने कैमवास पर दूँ लेकिन पब्लिक ट्रांसपोर्ट में यह संभव नहीं था। शायद मेरी यह इच्छा भगवान ने सुन ली और ये इतने अच्छे तरीके से पूरा हो रहा था कि इतना बेहतर मैं सोच भी नहीं सकता था, खासकर इतने बेहतरीन लोगो के साथ। तिरूमला की चढ़ाई के क्रम में हम कई सुंदर जगह पर रुके दोपहर का भोजन इत्यादि सब इसी बीच सम्पन्न हुआ।

तिरूमला पहुँच कर थोड़ी देर के लिए महसूस ही नहीं हुआ की यह वही जगह है जहाँ तीन बार पहले आ चुका हूँ। यह अंतर दिखने के दो कारण थे, पहला कोरोना का असर से सब खाली-खाली सा था और दूसरा इस खाली समय का सदुपयोग करते हुए बहुत से नये निर्माण कराये जा रहे थे जो आगामी दिनों में ज्यादा मनोरम दिखने के साथ सुविधाजनक भी हो।

तिरूमलई अन्ना ने पहले ही कमरा बुक कर रखा था, संयोग से हमें ग्राउंड फ्लोर पर ही कमरा मिल गया अन्यथा हमें काफी परेशानी होती। थोड़ी देर आराम करने के बाद शाम में हम सब तिरूमला के भ्रमण के लिए निकले। सड़के खाली होने हम धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए सभी स्थल का आनंद ले रहे थे। साथ ही कुछ खरीदारी भी कर रहे थे।

कमरे में वापस आने पर हमसब अपने- अपने खेल क्षेत्रों के बारे में ढेर सारी बातें की। मुझे इन सभी बातों के क्रम में अपने कई सवाल के जबाब स्वतः मिल गये वो भी बिना पूछे। अगले सुबह हमें 5.30 में मंदिर दर्शन के लिए जाना था अतः सब सुबह 4 बजे से ही तैयार होने लगे। हम सभी ने धोती धारण की, हमारे कुछ साथी को थोड़ी दिक्कत हो रही थी पर चेहरे पर मुस्कान और जोश उसे प्रकट नहीं होने दे रहा था। हमें ज्यादा नहीं चलना पड़े इसके लिए कल शाम को ही सुरक्षा अधिकारी से बात कर ली थी, उन्होंने मदद का पूर्ण आश्वासन दिया। पर होना तो वही होता है जो होना हो। सुबह उस गेट पर पहुँचें तो देखा सब कर्मचारी बदल चुके थे। अतः हमें सामान्य रास्ते ही जाना पड़ा पर हॉल में आकर कुछ कर्मचारियों ने हमें अलग-अलग रास्ता बताना शुरू कर दिया जिसके कारण बेवजह हमें काफी चलना पड़ा। चलने में हम सभी को काफी परेशानी हो रही थी। विजय का वैसाखी तो कई बार फिसला, मैं भी एक बार फिसल गया। खैर अंत भला तो सब भला इसलिए दर्शन के समय हमें बालाजी के सामने कुछ देर खड़े रहने का अवसर मिला और मानो सब तकलीक छूमंतर हो गई।

मंदिर से बाहर आकर हमें पता चला की हमारी गाड़ी यहाँ से लगभग एक किलोमीटर से भी ज्यादा दूरी पर है जो की हमारे लिए चलना मुश्किल था । तब अन्ना ने एक पुलिसकर्मी से सारी बात बताई तो उसने हम सब को शुभकामना देते हुए एक बैट्री कार वाले को कहा कि इन सब को केवल मुख्य द्वार तक नहीं बल्कि जहाँ इनकी गाड़ी है वहाँ तक छोड़ कर आओ। हमने भगवान और उन दोनों को धन्यवाद देते हुए वापसी यात्रा आरंभ की।

हम सब ने तिरुमला स्थान में 24 घंटे से ज्यादा समय गुजारा, कोरोना के कारण अन्य मंदिर बंद थे इसलिए हम उन सब जगहों पर नहीं गये। इस दौरान 2-3 बार गहरा ध्यान भी किया । सच में देव स्थानों में एक विशेष वातावरण होता है, शायद मेरा ध्यान सहज ही लग जाता था। तिरुमल से नीचे आते समय हमें लगभग इंजन चालू करने की जरूरत ही नहीं पड़ी, बीच-बीच में रूककर प्रकृति के नजारे का आनंद भी ले रहे थे। एक जगह तो पहाड़ के किनारे पर कुछ ऐसा दृश्य प्रतीत हुआ मानों कई सारे चेहरे उपर से सबको देख रहा हो।

चेन्नई लौटने से पहले हम एक दिन के लिए तिरुतनी के एक गाँव में ठहरे। इसका अनुभव इतना अनोखा रहा कि सच कहूँ तो पिछले 7 वर्षों में कभी तमिलनाडू के संस्कृति और जीवन शैली का इतना आनंद नहीं लिया था । सच में यदि किसी प्रदेश विशेष को देखना और

समझना हो तो आप उस राज्यों के गाँव में कुछ समय गुजारें, क्योंकि शहरों का रंग-ढंग तो लगभग एक सा ही होता है।

अगले दिन हमसब अपने-अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना हुए। वापसी के समय में दिमाग में वह सब दृश्य और सीख चल रहे थे जो कुछ पिछले 3-4 दिनों में देखा और सीखा। कोशिश करूँगा जल्दी ही इन सीखों को जीवन में उतारूँ ताकि पैरा-ओलम्पिक में स्वर्ण पदक और जीवन में सम्भाव आ सके।

संजीव कुमार गिरी
डीईओ



सम्मान करो

नारी ने ही जन्म दिया है नारी का गुणगान करो,
कवि चाहता है तुम केवल नारी का सम्मान करो ।
नारी जिसको गलत नज़र से देख रहे हो तुम दिन रात,
उसी किसी नारी के दम पर मिली है जीवन की सौगात ।
नारी जिसको गलत समझकर हम इतना इठलाते हैं,
उसीने जीवन दान दिया है याद नहीं कर पाते हैं ।
दौर था वो कुछ उल्टा पुल्टा जिसमें कुछ अपनत्व ना था,
नारी ना थी दुनिया में तब दुनिया का अस्तित्व ना था ।
नारी को जब निर्बल कहकर पुरुषत्व हरजाई हुई,
तोड़ के सारी बंदिश देखो पैदा लक्ष्मीबाई हुई ।
भारत की हर नारी देवी इसे ना मैला कर देना,
अपनेपन का भाव सजाना नज़र जो नारी पर देना ।
नहीं कोई आरुषी मरती नहीं निर्भया खोती जान,
अगर दरिन्दों के भीतर भी जागृत होता इक इन्सान ।
कुसुम कली होती है नारी इनका ना अपमान करो,
कवि चाहता है तुम केवल नारी का सम्मान करो ।

संजीव कुमार गिरि
डी.ई.ओ

कृष्ण-अर्जुन संवाद

दुर्योधन ने श्री कृष्ण की पूरी नारायणी सेना मांग ली थी, और अर्जुन ने केवल श्री कृष्ण को मांगा था। उस समय भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन की चुटकी लेते हुए कहा:-

हार निश्चित है तेरी, हर दम रहेगा उदास...

माखन दुर्योधन ले गया, केवल छाछ बच गयी तेरे पास।

अर्जुन ने कहा:-

हे प्रभु जीत निश्चित है मेरी, दास नहीं हो सकता उदास...

माखन लेकर क्या करूँ, जब माखन चोर है मेरे पास.....

खुशबू कुमारी

डी.ई.ओ.

ए.एम.जी. ॥



कुछ अदभुत तथ्य

धन तभी सार्थक है,
जब धर्म भी साथ हो।
विशिष्टता तभी सार्थक है,
जब शिष्टता भी साथ हो।
सुंदरता तभी सार्थक है,
जब स्वास्थ्य भी अच्छा हो।
देवस्थान गमन तभी सार्थक है,
जब व्यवहार भी अच्छा हो।
विद्वता तभी सार्थक है,
जब सरलता भी साथ हो।
प्रसिद्धि तभी सार्थक है,
जब मन में निरहंकारिता हो।
बुद्धिमता तभी सार्थक है
जब विवेक भी साथ हो।
परिवार का होना तभी सार्थक है,
जब उसमें प्यार और विश्वास हो।

खुशबू कुमारी
खुशबू कुमारी, डी.ई.ओ.
ए.एम.जी. ॥

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग पूरे विश्व में एक मुख्य वायुमंडलीय मुद्दा है। सूरज की रोशनी को लगातार ग्रहण करते हुए हमारी पृथ्वी दिनों-दिन गर्म होती जा रही है जिससे वातावरण में कार्बनडाईऑक्साइड का स्तर बढ़ रहा है। इसके लगातार दुष्प्रभाव से इंसानों के लिए बड़ी समस्या हो रही है। जिसके लिए बड़े स्तर पर सामाजिक जागरूकता की जरूरत है। इस समस्या से निपटने के लिए लोगों को इसका अर्थ, कारण और प्रभाव का पता होना चाहिए जिससे जल्द से जल्द इसके समाधान तक पहुँचा जा सके। इससे मुकाबला करने के लिए हम सभी को एक साथ आगे आना चाहिए और धरती पर जीवन को बचाने के लिए इसका समाधान करना चाहिए।

आज धरती पर वायुमंडल के बड़े विषय के रूप में ग्लोबल वार्मिंग है जिसकी वजह से धरती के सतह का तापमान लगातार बढ़ रहा है। ऐसा आकलन किया गया है कि अगले 50 या 100 वर्षों में धरती का तापमान इतना बढ़ जायेगा कि जीवन के लिए इस धरती पर कई सारी मुश्किलें खड़ी हो जाएँगी। धरती पर तापमान के बढ़ने पर जो सबसे मुख्य और जाना हुआ कारण है, वो है वायुमंडल में बढ़ती कार्बनडाईऑक्साइड की मात्रा का स्तर।

धरती पर इस विनाशक गैस के बढ़ने की मुख्य वजह जीवाश्म ईंधनों जैसे कोयला और तेल का अत्यधिक इस्तेमाल और जंगलों की कटाई है। धरती पर छटती पेड़ की संख्या की वजह से कार्बनडाईऑक्साइड का स्तर बढ़ता है। इन हानिकारक गैसों का इस्तेमाल करने के लिए पेड़-पौधे ही मुख्य स्रोत होते हैं तथा इंसानों द्वारा इसे कई रूपों में छोड़ा जाता है। बढ़ते तापमान की वजह से समुद्र जल स्तर बढ़ना, बाढ़, तूफान खाद पदार्थों की कमी, तमाम तरह की बीमारियाँ आदि का खतरा बढ़ जाता है।

धरती के लगातार बढ़ते तापमान स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। पूरे विश्व में इंसानों की ध्यान न देने वाली गलत आदतों की वजह से हमारी धरती की सतह दिनों-दिन गर्म होती जा रही है। धरती के वातावरण के लिए ये सबसे चिंताजनक पहलू है क्योंकि इससे लगातार धरती पर जीवन की संभावनाएँ कम होती जाएँगी। इसके समाधान तक पहुँचने से पहले, हमें वातावरण पर इसके कारण और पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जरूर सोचना चाहिए जिससे हम आश्वस्त हो सकें कि हम इससे राहत पाने की सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। धरती के लगातार

गर्म होने का मतलब पर्यावरण में कार्बनडाईऑक्साइड के बढ़ते स्तर के कई कारण हैं जैसे पेड़ों की कटाई, कोयले का इस्तेमाल, जीवाराम ईंधनों का इस्तेमाल, परिवहन के लिए गैसोलिन का इस्तेमाल, बिजली का गैर-जरूरी इस्तेमाल आदि से धरती का तापमान बढ़ता है। इससे ओजोन परत में क्षरण, समुद्र जल स्तर में वृद्धि, मौसम के स्वाभाव में बदलाव, बाढ़, तूफान, महामारी, खाद्य पदार्थों की कमी, मौतें आदि में बढ़ोतरी होगी जो धरती पर जीवन के संभावना को कम करता जाएगा। ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे के लिए किसी एक को दोष नहीं दिया जा सकता बल्कि पूरी मानव जाति इसके लिये जिम्मेदार है जिसका समाधान वैश्विक जागरूकता और हर एक के उदार प्रयास से ही संभव होगा।

धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष कड़ी समस्या के रूप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। अगर इसे नजरअंदाज किया गया और इससे निजात पाने के लिए पूरे विश्व के देशों द्वारा तुरंत कोई कदम नहीं उठाया गया तो वो दिन दूर नहीं जब धरती अपने अंत की ओर अग्रसर हो जाएगी।

धरती पर कार्बनडाईऑक्साइड के बढ़ने से इंसानों से इंसानी जीवन पर इसका बड़ा प्रभाव देखने को मिलेगा। इससे लगातार गर्म हवाएँ, अचानक से आया तूफान, अप्रत्याशित चक्रवात, ओजोन परत में क्षरण, बाढ़, भारी बरसात, सूखा, खाद्य पदार्थों की कमी, महामारी और मौतें आदि में बढ़ोतरी होगी। ऐसा शोध में पाया गया है कि कार्बनडाईऑक्साइड के अधिक उत्सर्जन का कारण जीवाश्म ईंधनों के प्रयोग, खाद्य का इस्तेमाल, पेड़ों की कटाई, फ्रिज और एसी से निकलने वाली गैस, अत्यधिक बिजली के इस्तेमाल आदि हैं। ये ध्यान देने योग्य है कि अगर इसको नहीं रोका गया तो 2020 तक ग्लोबल वार्मिंग से धरती पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि कार्बनडाईऑक्साइड का उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है।

धरती पर ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव बढ़ने का कारण कार्बनडाईऑक्साइड के स्तर में बढ़ना है, सभी ग्रीनहाउस गैस (जलवाष्प, कार्बनडाईऑक्साइड, मीथेन) गर्म किरणों की पात को सोखता है जिसके बाद सभी दिशाओं में दुबारा से विकिरण होता है और धरती पर वापस आकर तापमान में वृद्धि करता है जो हमें ग्लोबल वार्मिंग के रूप में दिखाई देता है। ग्लोबल वार्मिंग के जीवन से संबंधित दुष्प्रभावों को रोकने के लिए हमें कार्बनडाईऑक्साइड और ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावों को बढ़ने वाले सभी कारकों को हमेशा के लिए त्यागना पड़ेगा जिससे हमारी पृथ्वी का तापमान गर्म न हो। हमें पेड़ों की कटाई नहीं करनी चाहिए, बिजली का सही इस्तेमाल करना चाहिए, लकड़ी को नहीं जलाना चाहिए आदि। पर्यावरण में कार्बनडाईऑक्साइड के बढ़ते स्तर के

कारण धरती के सतह का तापमान लगातार बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग है। ये विश्व समुदाय के लिए एक बड़ा और गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है। जरूरत है कि विश्व समाज के सभी देश इसके समाधान के लिए सकारात्मक कदम उठाये। नियमित बढ़ते धरती के तापमान से कई सारे खतरों का जन्म होगा जो इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व को कठिन बना देगा। ये धरती के आवोहवा में नियमित और स्थायी परिवर्तन को बढ़ा देगा और इससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगेगा।

दिनेश चंद मीना

लेखापरीक्षक

ए.एम.जी.।।



जीवन का वित्तीय विवरण

जन्म हमारा प्रारंभिक शेष है।

जो आता है, प्रत्यय है, जो जाता है, विकलन है।

मृत्यु हमारा शेषमाल है।

हमारे मित्र हमारी संपत्ति है, तो बुरी आदतें हमारा ऋण है।

हमारी खुशियाँ लाभ सी है, तो हमारे दुःख हानि है।

हमारा प्राण हमारी साख है, हमारा हृदय हमारी स्थायी संपत्ति है।

व्यवहार हमारी पुँजी है, तो ज्ञान हमारा निवेश है।

अंततः

ईश्वर हमारे लेखा परीक्षक हैं।।

वी. रुकमणि, व.ले.प.

ए.एम.जी.।।



कोविड-19 का एक निम्न मध्यम वर्गिय परिवार पर प्रभाव

यह कहानी हमारे गांव के एक नेक इंसान मिश्रा जी की है जो परिश्रमी होने के साथ-साथ बहुत दयालु इंसान भी हैं। उनका जीवन-यापन का जरिया कृषि मात्र है जो वर्ष में सिर्फ चार महिने ही होती है। गांव में सिमित संसाधन होने की वजह से उन्हें काम नहीं मिल पाता था। बहुत मुश्किल से मिश्रा जी के परिवार को दो वक्त की रोटी नसीब हो पाती थी। एक अच्छा जीवन जिने के लिए मिश्रा जी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कुछ वर्ष पहले पास के शहर में जाकर बस गए थे। मिश्रा जी पढ़े-लिखे थे तो उन्हें एक निजी कम्पनी में नौकरी मिल गई थी। अब मिश्रा जी के परिवार का जीवन बहुत अच्छे से बित रहा था। बच्चों का एडमिशन एक अच्छे स्कूल में हो गया था।

2019 का वर्ष जाते-जाते दुनियां में एक एसी महामारी छोड़ गया जो पूरे विश्व में बहुत ही भयानक तबाही मचाई है। यह महामारी कोरोना (COVID 19) नाम के वायरस के कारण उत्पन्न हुई है। यह वायरस लोगों में बहुत तेजी से फैल रहा है। जब कोई स्वस्थ व्यक्ति कोविड संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आ जाता है तो स्वस्थ व्यक्ति भी संक्रमित हो जाता है। इस वायरस से विश्व में करोड़ों लोग बिमार हो चुके हैं और लाखों लोगों की जानें जा चुकी है। इस वायरस के घातकता को देखते हुए इसके संक्रमण के चैन को तोड़ने के लिए हमारे देश के आदरनिय प्रधानमंत्री जी ने देश में 21 दिनों के लिए संपूर्ण लॉक डाउन की घोषणा की और सभी से एक-दूसरे को आस-पड़ोस में मदद करने की अपील की।

जब देश में इस कोरोना संकट से निपटने के लिए लॉकडाउन हुआ तो मिश्रा जी अपने स्वभाव की भांती अपने पड़ोस में रह रहे गरीबों और मजदूरों जिनका रोजी-रोटी का जरिया खत्म हो गया था उनके लिए खाने की व्यवस्था करने लगे और उनकी पत्नी और बच्चे उनके इस धर्म कर्म में सहयोग कर रहे थे। समय बीतने के साथ-साथ लॉकडाउन की अवधि भी बढ़ने लगी और मिश्रा जी की नौकरी चली गई। अब आफत मिश्रा जी के परिवार पर पड़ने लगी। नौकरी चले जाने से घर का किराया, इ.एम.आई की किश्तें, बच्चों के पढ़ाई की फिस और यहां तक की घर का राशन चलाने में भी मिश्रा जी को लाले पड़ने लगे। अब उनके उपर कर्ज होने लगा वह प्रत्येक दिन नई नौकरी की तलास में निकलते पर उन्हें कोई नौकरी नहीं मिल रही थी। कर्ज दिन व दिन बढ़ता जा रहा था। कुछ दिन बाद उन्हें कर्ज भी मिलना बंद हो गया। अंततः मिश्रा जी ने लेनदारों को कर्ज चुकाने का अश्वासान दिया और शहर छोड़कर गांव चले गए। गांव पहुंचकर मिश्रा जी इस बरसात के मौसम में अपने कृषि कार्य में लग गए। मिश्रा जी की आगे की कहानी इस “कुरिंजी” पुस्तिका के माध्यम से अगले वर्ष प्रकाशित की जाएगी।

सुधीर बर्णवाल
(डी.ई.ओ.)

कोरोनावायरस से जुड़े सवाल और उनके जवाब, जिन्हें जानना आपके लिए बेहद जरूरी

कोरोनावायरस एक संक्रामक रोग है, जो इंसानों और जानवरों में हो सकता है। इसका संबंध विषाणुओं के एक ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से सामान्य सर्दी-जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी गंभीर समस्या हो सकती है।

कोविड-19 क्या है?

कोविड-19 कोरोनावायरस का आधिकारिक नाम है। यह नाम विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दिया है।

कोविड-19 के लक्षण क्या हैं?

कोविड-19 के सबसे आम लक्षण बुखार, थकान और सूखी खांसी हैं। कुछ रोगियों में नाक बहना, गले में खराश और सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है।

कोविड-19 कैसे फैलता है?

कोविड-19 पीड़ित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है। अगर कोई कोविड-19 पीड़ित व्यक्ति खांसता है या सांस छोड़ता है तो उसके नाक या मुंह से निकली छोटी बूंदें आसपास की वस्तुओं और सतहों पर उतरती हैं। जब लोग इन वस्तुओं या सतहों को छूते हैं और उसके बाद अपने आंख, नाक या मुंह को छू लेते हैं तो यह संक्रमण उनमें भी फैल सकता है।

मैं खुद को बचाने और बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए क्या कर सकता हूँ?

नियमित तौर पर अपने हाथ साबुन और पानी से धोएं। उस व्यक्ति से कम से कम तीन फीट की दूरी बनाकर रखें, जो खांस रहा है या छींक रहा है। अपनी आंखों, नाक और मुंह को छूने से बचें। सुनिश्चित करें कि आप और आपके आस-पास के लोग अच्छी श्वसन स्वच्छता का पालन करें। इसका मतलब है कि खांसी या छींक आने पर अपनी मुड़ी हुई कोहनी या रूमाल से अपने मुंह और नाक को ढंकना। फिर इस्तेमाल किए गए रूमाल को तुरंत फेंक दें। इसके अलावा आप मास्क का भी इस्तेमाल कर सकते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने की सलाह दे सकते हैं। यदि

आप अपने आप को अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं, जैसे कि बुखार, कफ या सांस लेने में परेशानी है तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

मैं खुद को बचाने और बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए क्या कर सकता हूँ?

नियमित तौर पर अपने हाथ साबुन और पानी से धोएं। उस व्यक्ति से कम से कम तीन फीट की दूरी बनाकर रखें, जो खांस रहा है या छींक रहा है। अपनी आंखों, नाक और मुंह को छूने से बचें। सुनिश्चित करें कि आप और आपके आस-पास के लोग अच्छी श्वसन स्वच्छता का पालन करें। इसका मतलब है कि खांसी या छींक आने पर अपनी मुड़ी हुई कोहनी या रूमाल से अपने मुंह और नाक को ढंकना। फिर इस्तेमाल किए गए रूमाल को तुरंत फेंक दें। इसके अलावा आप मास्क का भी इस्तेमाल कर सकते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने की सलाह दे सकते हैं। यदि आप अपने आप को अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं, जैसे कि बुखार, कफ या सांस लेने में परेशानी है तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

मुझे कोविड-19 को पकड़ने की कितनी संभावना है?

यह निर्भर करता है कि आप कहां हैं और विशेष रूप से उस जगह के आस-पास जहां कोविड-19 का प्रकोप हो। अधिकांश स्थानों के अधिकांश लोगों के लिए कोविड-19 की चपेट में आने का जोखिम अभी भी कम है। इसलिए बेहतर है कि बेवजह कहीं भी आने-जाने से बचें और खासकर भीड़भाड़ वाले इलाकों में तो न ही जाएं।

क्या मुझे कोविड-19 की चिंता करनी चाहिए?

कोविड-19 संक्रमण के कारण बीमारी आम तौर पर हल्की होती है, खासकर बच्चों और वयस्कों के लिए। हालांकि, यह गंभीर बीमारी का कारण बन सकता है। हर पांच में से एक व्यक्ति जो इसकी चपेट में आता है, उसे अस्पताल में देखभाल की आवश्यकता होती है।

गंभीर बीमारी विकसित होने का खतरा किसे है?

यह साफ तौर पर नहीं कह सकते हैं, लेकिन अभी तक के शोध के मुताबिक, कोविड-19 वृद्धों और उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, फेफड़े की बीमारी, कैंसर या मधुमेह से जूझ रहे लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक गंभीर बीमारी पकड़ने का खतरा है।

क्या एंटीबायोटिक्स कोविड-19 को रोकने या उसका इलाज करने में कारगर हैं?

नहीं। एंटीबायोटिक्स वायरस के खिलाफ काम नहीं करते हैं, वे केवल बैक्टीरिया (जीवाणु) के संक्रमण पर काम करते हैं। कोविड-19 वायरस के कारण होता है, इसलिए उसपर

एंटीबायोटिक्स काम नहीं करते हैं। एंटीबायोटिक्स का इस्तेमाल कोविड-19 की रोकथाम या उपचार के साधन के रूप में नहीं किया जाना चाहिए।

क्या कोविड-19 का कोई टीका, दवा या उपचार है?

अभी नहीं। कोविड-19 को रोकने या इससे संक्रमित व्यक्ति के इलाज के लिए कोई टीका या दवा अभी तक नहीं बनी है, लेकिन इसका इलाज ढूंढा जा रहा है।

क्या कोविड-19 SARS के समान है?

नहीं। हालांकि कोविड-19 SARS दोनों ही सांस की समस्या से संबंधित हैं, लेकिन उनके कारण होने वाली बीमारियां काफी अलग हैं।

क्या मुझे अपनी सुरक्षा के लिए मास्क पहनना चाहिए?

यदि आप कोविड-19 के लक्षणों (विशेष रूप से खांसी) के साथ बीमार हैं या किसी ऐसे व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, जो कोविड-19 से पीड़ित है, तो मास्क जरूर पहनें। डिस्पोजेबल फेस मास्क का उपयोग केवल एक बार किया जा सकता है। यदि आप बीमार नहीं हैं या किसी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में नहीं हैं, जिसे खांसी या सर्दी-जुकाम हो तो मास्क पहनने की जरूरत नहीं है।

मास्क कैसे लगाएं, इस्तेमाल करें, उतारें और डिस्पोज करें?

मास्क को छूने से पहले हाथों को साबुन और पानी से साफ करें। इसके बाद मास्क लें और यह सुनिश्चित करें कि वो सीधा है या नहीं। फिर मास्क को अपने मुंह और नाक के पास ले जाएं और दोनों किनारों पर बनी पट्टी को अपने दोनों कानों में लगा लें। इसके बाद जब भी आप मास्क उतारें तो उसे डस्टबिन में डाल दें और साथ ही आंख, नाक और मुंह छूने से पहले हाथ फिर से साबुन से अच्छी तरह धो लें।

कोविड-19 के लिए ऊष्मायन अवधि कब तक है?

'ऊष्मायन अवधि' का अर्थ है वायरस को पकड़ने और बीमारी के लक्षणों की शुरुआत के बीच का समय। कोविड-19 की ऊष्मायन अवधि के अधिकांश अनुमान 1-14 दिनों तक होते हैं, आमतौर पर लगभग पांच दिन तक। बाकी अभी इसपर शोध चल रहे हैं।

क्या मनुष्य किसी पशु स्रोत से कोविड-19 से संक्रमित हो सकते हैं?

कोरोनावायरस वायरस का एक बड़ा परिवार है, जो जानवरों में आम है। कभी-कभी, लोग इन वायरस से संक्रमित हो जाते हैं जो बाद में अन्य लोगों में फैल सकता है। इससे अपने आप को बचाने के लिए जीवित जानवरों के बाजारों का दौरा न करें और जानवरों के सीधे संपर्क में आने से बचें।

क्या मुझे अपने पालतू जानवर से कोविड-19 हो सकता हूँ?

नहीं। अभी तक इस बात के प्रमाण नहीं मिले हैं कि कोई पालतू जानवर जैसे कि बिल्ली और कुत्ते कोविड-19 से संक्रमित हुए हों और वो वायरस को फैला सकते हैं।

सतहों पर वायरस कितने समय तक जीवित रहता है?

यह निश्चित नहीं है कि कोविड-19 का वायरस कब तक सतहों पर जीवित रहता है, लेकिन यह अन्य वायरस की तरह ही व्यवहार करता है। अध्ययनों से पता चलता है कि कोरोनावायरस (कोविड-19) कुछ घंटों या कई दिनों तक सतहों पर बना रह सकता है। यह अलग-अलग स्थितियों (उदाहरण के लिए सतह, तापमान या वातावरण की आर्द्रता) के तहत भिन्न हो सकता है।

क्या किसी भी क्षेत्र से पैकेज प्राप्त करना सुरक्षित है जहां कोविड-19 की सूचना है?

हां। एक संक्रमित व्यक्ति की वाणिज्यिक वस्तुओं के दूषित होने की संभावना कम है और वायरस के पकड़ने का जोखिम भी।

क्या ऐसा कुछ है जो मुझे नहीं करना चाहिए?

कोविड-19 के खिलाफ निम्नलिखित उपाय प्रभावी नहीं हैं, ये हानिकारक हो सकते हैं।

. धूम्रपान

. कई मास्क एक साथ पहनना

. एंटीबायोटिक्स लेना

किसी भी मामले में यदि आपको बुखार है, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है, तो अधिक गंभीर संक्रमण विकसित करने के जोखिम को कम करने के लिए डॉक्टर से सलाह लें और साथ ही उसे अपनी हाल में की गई यात्रा की भी जानकारी जरूर दें।

नोट- ये सभी सवाल और जवाब विश्व स्वास्थ्य संगठन से लिए गए हैं।

वी. राधा
व.लेखापरिक्षक



चुटकुले

गौरव - मम्मी आपको जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दूँ ?

माँ - केक पर कैंडल की जगह अपना फोन जला देना.....

गौरव - क्या.....!!!



पति - सीता, ये क्या है, इस दाल में न नमक है, न मिर्च है, तुम सारा दिन मोबाईल में लगी रहती हो...

पत्नि - अरे, पहले आप मोबाईल साइड में रख कर खाना खाइए, कब से देख रही हूँ, पानी में डूबो-डूबो कर रोटी खा रहे है।

पति - क्या.....!!!



दूल्हा - अगर तुम्हे कुछ हो गया तो मैं पागल हो जाऊँगा।

दुल्हन - दूसरी शादी तो नहीं करोगे ?

दूल्हा - इस पागल का क्या भरोसा कुछ भी कर सकता है।

दुल्हन - क्या.....!!!



पत्नी ने ऊंगली के इशारे से पति को बुलाया।

पति - बोलो क्या काम है ?

पत्नी - कुछ नहीं, बस अपनी ऊंगली की ताकत चेक कर रही थी।

पति - क्या.....!!!



छुट्टी के दिन पति सुबह-सुबह फेसबुक खोल कर बैठ गया। उसकी एक महिला मित्र ने सैंडविच का फोटो अपलोड करके लिखा...

आओ सब नाश्ता करे।

पति ने कमेंट किया - बहुत स्वादिष्ट नाश्ता था मजा आ गया।

पत्नी ने यह कमेंट पढ़ लिया। 4 घंटे तक पति को नाश्ता ना देने के बाद

पत्नी - लंच घर पर करोंगे या फेसबुक पर।

पति - क्या.....!!!



वी. राधा
व.लेखापरिक्षक

नई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकता तथा भविष्य की संभावनाएं निहित होती हैं। शिक्षा नीति की दृष्टि से विडंबना यह रही कि 1968 में पहली और 1986 में दूसरी शिक्षा नीति के बाद सरकारों के द्वारा शिक्षा का क्षेत्र उपेक्षित छोड़ दिया गया। यद्यपि 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधुनिकीकरण पर केंद्रित कही जाती है, जिसमें देश में शिक्षा के विकास के लिए व्यापक ढांचा, शिक्षा के आधुनिकीकरण और बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने पर जोर देने की बात कही गई थी। किंतु 1990 के दौर में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकता में आमूलचूल परिवर्तन किए, जिन्हें पूरा करने में शिक्षा नीति 1986 समक्ष नहीं रही। निरक्षरता की दर निरंतर बढ़ती रही, ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित ही रहे। विद्यालय तथा महाविद्यालयों की ढांचागत एवं अध्ययन-अध्यापन से जुड़ी हुई तमाम परेशानियां अभी तक भी देखी जा सकती हैं। वर्ष 2014 में बहुमत में आई मोदी सरकार के समझ राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक बड़ी चुनौती एवं आवश्यकता के रूप में सामने थी। जिसे देखते हुए जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डा** के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप प्रस्तुत किया। तत्पश्चात केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने एक व्यापक लोकतांत्रिक नीति अपनाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित देश के कोने-कोने से सभी वर्गों के लोगों की राय ली। यह प्रयास प्रधानमंत्री मोदी के “सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास” की भावना पर आधारित दिखाई देता है।

भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ की शिक्षा नीति बनाने के लिए देश की लगभग 2.5 लाख ग्राम पंचायतें, 6600 ब्लॉक और 650 जिलों से विचार लिए गए। इसमें शिक्षाविदों, अध्यापकों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों एवं व्यापक स्तर पर छात्रों से भी सुझाव लेकर उनका मंथन किया गया। जन आकांक्षों के अनुरूप एवं राष्ट्रीय आवश्यकता और चुनौतियों के अनुरूप नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की गई है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा - “यह शिक्षा के क्षेत्र में बहुप्रतीक्षित सुधार है, जिससे लाखों लोगों का जीवन बदल जाएगा। एक भारत -श्रेष्ठ भारत पहल के तहत इसमें संस्कृत समेत भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाएगा।” नई शिक्षा नीति के कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं - मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय किया गया, केंद्र व राज्य सरकारों के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर जीडीपी के 6 फीसद हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य, शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5+3+3+4 प्रणाली पर विभाजित किया गया है, तकनीकी शिक्षा, भाषा की बाधयताओं को दूर करना, दिव्यांग छात्रों एवं महिलाओं के लिए शिक्षा को सुगम बनाने पर बल है, वर्तमान की रटंत एवं बोझिल होती जा रही शिक्षा के स्थान पर रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना के प्रोत्सानव पर बल दिया जाएगा।

अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा का विशेष महत्व होता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अंग्रजी के वर्चस्व को बढ़ावा देती है, जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास बाधित होता है और उसके सीखने की गति भी धीमी रहती है। मनोविज्ञान के अनुसार बालक अपनी मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में सरलता एवं शीघ्रता से सीखता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति में भाषाई विविधता को बढ़ावा और संरक्षण देने की बात कही गई है। कक्षा 5 तक मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा को अध्यापन के माध्यम के

रूप में अपनाने पर बल है। मातृभाषा के अध्ययन की प्रक्रिया कक्षा 8 और आगे की शिक्षा के लिए भी प्रयोग किया जा सकती है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया आज जोरों पर है। विभिन्न तकनीकी संसाधनों के विकास के चलते ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में भी बाधाएं टूट रही हैं। नई शिक्षा नीति भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की संकल्पना को लेकर आई है, जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से अनुवाद और उनकी नई व्याख्या करने का कार्य सुगमता से हो सके। आज भारतवर्ष में दिव्यांग छात्रों की भी एक बड़ी संख्या है। उनकी आवश्यकताओं के लिए नई शिक्षा नीति-शिक्षण सामग्री और आधारभूत ढांचा तैयार करने पर बल देती है। शिक्षा व्यवस्था के चार प्रमुख आयाम हैं - विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यक्रम और ढांचागत सुविधाएं। इन चारों को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा व्यवस्था व्यापक संभावनाओं के साथ दिखाई देती है। प्रारंभिक शिक्षा में 3 से 8 वर्ष की आयु। जिसमें 3 से 6 वर्ष आंगनवाड़ी/ बालवाड़ी और प्री स्कूल के माध्यम से मुफ्त सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना है।

6 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 1 और 2 की शिक्षा रहेगी। प्रारंभिक शिक्षा की संकल्पना खेल और गतिविधि आधारित होगी। बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की संकल्पना की नई शिक्षा व्यवस्था में है। पाठ्यक्रम और मूल्यांकन नई शिक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण आयाम हैं, जिसमें पाठ्यक्रम के बोझ को कम करते हुए छात्रों को 21वीं सदी के कौशल के विकास, अनुभव आधारित शिक्षण और तार्किक चिंतन को प्रोत्साहन पर बल दिया जायगा। कक्षा 6 से ही व्यवसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाएगा और इंटरनशिप की व्यवस्था भी की जाएगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करेगी और विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए “परख”

नाम से राष्ट्रीय आकलन केंद्र की स्थापना की जाएगी। शिक्षक नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन किया जाएगा। कार्य प्रदर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नति का प्रावधान रहेगा। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यवसायिक मानक तैयार किए जाएंगे और उनके प्रशिक्षण की भी व्यवस्था रहेगी। अध्यापन के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत ब.एड डिग्री का होना अनिवार्य होगा। शिक्षण संस्थानों में शोध तथा फीस के लिए भी मानक तय किए जाएंगे।

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी निवेश एवं वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में ढाचागत सुधार किए जाएंगे। नई शिक्षा नीति 2020 में सकल नामांकन को 26.3 फीसदी से बढ़ाकर 50 फीसद तक करने का लक्ष्य है, जिसके अंतर्गत उच्च शिक्षा संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ा जाएगा। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम छोड़ने / विषय बदलने के अवसर दिए जाएंगे और उसी के अनुरूप विद्यार्थी को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त और भी अनेक प्रावधान किए गए हैं। नई शिक्षा नीति को प्रस्तुत करते हुए शिक्षा मंत्री डा** रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा- “ देश के प्रधानमंत्री ने एक नए भारत के निर्माण की बात की है - जो स्वच्छ भारत होगा, स्वस्थ भारत होगा, सशक्त भारत होगा, समृद्ध भारत होगा, श्रेष्ठ भारत होगा। ” शिक्षा नीति 2020 की व्यापक संकल्पनाओं का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा- “ यह शिक्षा नीति ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान नवाचार, प्रौद्योगिकी से युक्त संस्कारक्षम, मूल्यपरक, हर क्षेत्र में, हर परिस्थिति का मुकाबला करने वाली, पूरी दुनिया के लिए, भारत में ज्ञान की महाशक्ति के रूप में उभर करके आएगी।”

नई शिक्षा नीति का लागू होना शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक, साहसिक एवं दूरगामी दृष्टिकोण वाला कार्य है। इसके लिए शिक्षा मंत्रालय एवं मंत्री डा*** रमेश पोखरियाल निशंक बधाई के पात्र हैं। नई शिक्षा नीति का लागू करने के लिए

मंत्रालय द्वारा रोडमैप भी तैयार किया गया है, जिसमें नीति के सभी प्रावधानों को लागू करने की एक समय सीमा तय की गई है। करीब 75 फीसद प्रावधानों को 2024 तक लागू करने का लक्ष्य है। इसी प्रकार बचे हुए प्रावधान भी वर्ष 2035 तक चरणबद्ध तरीके से लागू किए जाएंगे। नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए उच्च स्तरीय कमेटी भी गठित की जाएगी, जो केंद्र और राज्यों के बीच नीति के अमल पर हर हाल समीक्षा करेगी। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि - आज भारत ज्ञान-विज्ञान, सूचना-प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। कौशल के आधार पर आत्मनिर्भर भारत का संकल्प प्रधानमंत्री मोदी द्वारा संकल्पित किया जा चुका है। ऐसे में नई शिक्षा नीति प्रभावी होगी और यह नए भारत की नींव सिद्ध होगी।

वी.चित्रा,
हिंदी अधिकारी



इंटरनेट

इंटरनेट हमारे आज के जीवन के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। 100 साल पहले किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि इंसान खुद ही किसी ऐसी चीज की रचना कर देगा, जिससे दुनिया की तमाम सारी जानकारी एक ही स्थान पर बहुत ही आसानी से मिल जायगी और दुनिया के लगभग सभी देश लगभग सभी देश आपस में जुड़े होंगे। संसाधनों को साँझा करने अथवा सूचनाओं का आदान प्रदान करने के लिए टी.सी.पी/ आई.पी प्रोटोकॉल के द्वारा दो अथवा कई कम्प्यूटर्स को एक साथ जोड़कर अंतःसम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया को इंटरनेट करते हैं तथा इनके बीच की साँझा करने की प्रक्रिया को कंप्यूटर नेटवर्क कहते हैं। आज के समय में हम वीडियो कान्फ्रेंस कॉलिंग, स्काईप या दूसरे तरीकों से अपनी जगह पर रह कर ही किसी भी व्यापारिक या निजी बैठक का हिस्सा बन सकते हैं।

इंटरनेट की अपनी एक दुनिया है और इस दुनिया से सम्बद्धता करने के तीन स्तर होते हैं।

प्रथम स्तर पर उपभोक्ता केवल इंटरनेट पर सूचनाएँ या जानकारी देख सकता है। द्वितीय स्तर पर उपभोक्ता इंटरनेट का एक आंशिक भाग बन जाता है और सूचनाएँ एकत्रित करने के अलावा वह अपनी वेबसाइट भी बना सकता है। तृतीय स्तर पर उपभोक्ता स्वयं इंटरनेट प्रणाली का मुख्य हिस्सा बन जाता है।

इंटरनेट के लाभ

- इंटरनेट की सहायता से हम किसी भी प्रकार की जानकारी और किसी भी सबाल का हल कुछ ही पलों में प्राप्त कर सकते हैं।

- इंटरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में बैठें किसी भी व्यक्ति से बिना शुल्क के घंटों तक बातें कर सकते हैं।
- इंटरनेट एक वर्ल्ड वाइड वेब है, जिसकी सहायता से हम दुनिया के किसी भी कोने में अपनी मेल या जरूरी दस्तावेजों को पलक झपकते ही भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं।
- इंटरनेट मनोरंजन का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत, गेम्स फिल्म आदि को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के डाउनलोड कर सकते हैं और अपनी बोरियत को दूर कर सकते हैं।
- इंटरनेट की सहायता से बिजली, पानी और टेलीफोन के बिन का भुगतान घर पर बैठे बिना किसी परेशानी के और बिना लंबी लाइनों में खड़े हुए किया जा सकता है। इंटरनेट से हमें घर बैठे रेलवे बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, पढ़ाई, बैंकिंग, नौकरी आदि सुविधाएँ मिल जाती हैं।
- इंटरनेट के माध्यम से होने वाले वित्तीय एवं वाणिज्यिक प्रयोगों ने बाजार की अभिधाराणाओं को एक नई रूप रेखा प्रदान की है।
- सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से हम नए-नए दोस्त बना सकते हैं जिससे हमें बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है।
- सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से हम किसी भी खबर को एक ही पल में एक ही शेयर से बहुत सारे लोगों तक पहुंचा सकते हैं।
- जो लोग किसी समस्या की वजह से रेगुलर क्लास लगाकर नहीं पढ़ सकते उनके लिए इंटरनेट क्रांतिकारी बदलाव लाया है। आज के समय में ऑनलाइन क्लासेस के माध्यम से कोई भी व्यक्ति घर पर ही पढ़कर परीक्षा दे सकता है।

- सुयोग्य वर-वधु की तलाश को भी इंटरनेट ने आसान कर दिया है। इंटरनेट पर ऐसी बहुत सी मैट्रीमोनी साइट्स हैं जिन पर आप अपनी पसंद के जीवन-साथी की तलाश कर सकते हैं।
- जो लोग पार्ट टाइम जॉब करके पैसा कमाना चाहते हैं उनके लिए भी इंटरनेट एक वरदान के समान है। आज के समय में बहुत सारी ऑनलाइन जॉब्स उपलब्ध हैं जिससे घर बैठे ही पैसा कमाया जा सकता है।
- कुकिंग सीखने के लिए भी अब कोई कुकिंग क्लासेज में पैसा बर्बाद करने की जरूरत नहीं है। आपको जो भी सीखना हो वो आप यू-ट्यूब पर लाइव देखकर सीख सकते हैं।
- इंटरनेट सेवा के माध्यम से अब ई-बाजार के बढ़ते चलन ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को मिटा दिया है।
- इंटरनेट एक-दूसरे से जोड़ने में मदद करता है। आज के समय में इंटरनेट पर ऐसे बहुत से माध्यम मौजूद हैं जिनकी सहायता से हम एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं। इससे हमें किसी के दूर होने का अहसास नहीं होता है।
- इंटरनेट हमारी पढ़ाई में भी बहुत मदद करता है। आज के समय में बाजार में किताबें बहुत ही महंगी आती हैं और प्रत्येक व्यक्ति उन्हें खरीद नहीं सकता है। आप उन्हें इंटरनेट की सहायता से पढ़ सकते हैं और डाउनलोड भी कर सकते हैं।

इंटरनेट की हानियाँ

इंटरनेट का उपयोग लेना लाभप्रद है लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग करना नुकसानदायक भी हो सकता है। क्योंकि जहाँ लाभ होता है वहाँ हानि भी छुपी होती है। लाभ और हानि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

- इंटरनेट पर सुविधा की वहह से व्यक्तिगत जानकारी की चोरी बढ़ गई है, जैसे - क्रेडिट कार्ड नंबर आदि

- आज के समय में इंटरनेटका प्रयोग जासूसों के द्वारा तेश की सुरक्षा व्यवस्था को भेदने के लिए किया जाने लगा है जो कि सुरक्षा दृष्टि से खतरनाक है। आज के समय में गोपनीय दस्तावेजों की चोरी भी होने लगी है।
- गोपनीय दस्तावेजों की चोरी के लिए स्पामिंग का इस्तेमाल किया जाता है। यह एक अवांछनीय ई-मेल होती है जिसके माध्यम से गोपनीय दस्तावेजों की चोरी की जाती है।
- इंटरनेट से रेलवे टिकेट बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, बैंकिंग, नौकरी की खोज आदि सुविधाएँ घर बैठे ही मिल जाती हैं लेकिन इससे पर्सनल जानकारी जैसे आपका नाम, पता और फोन नंबर का गलत उपयोग होने का खतरा भी बना रहता है।
- इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के वजह से कैंसर की बीमारी होने लगी है। इंटरनेट के चलन की वजह के कुछ असामाजिक तत्व दूसरों के कंप्यूटर की कार्य प्रणाली को नुकसान पहुँचाने के लिए वायरस भी भजते हैं।
- जो व्यक्ति एक बार इंटरनेट का प्रयोग कर लेता है, उसे इसकी आदत हो जाती है और फिर उसका एक दिन भी इंटरनेट के बिना गुजारना मुश्किल हो जाता है।
- इंटरनेट पर पोरोनोग्राफी साइट पर अत्यधिक मात्रा में अश्लील सामग्री विद्यमान है। जिसका बुरा प्रभाव सबसे अधिक बच्चों पर और युवा पीढ़ी पर पड़ा है।
- पोरोनोग्राफी साइट्स को देखकर लोग गलत रास्ते की ओर बढ़ रहे हैं और अपराध की तरफ अग्रसर हो रहे हैं। इस प्रकार की अश्लील सामग्री इंटरनेट पर डालने वाले लोग बहुत अच्छी आमदनी कमा रहे हैं। यह हमारे समाज के लिए जहर की तरह है जिसके खतरनाक परिणामों को हम हर दिन देखते

हैं। इसलिए इस प्रकार की सामग्री इंटरनेट पर डालने से रोकने के लिए सख्त नियम बनाने चाहिए।

- इंटरनेट की वजह से सोशल साइट्स का चलन बढ़ गया है। अब लोग परिवार में बैठकर बातें करने की जगह पर अकेले रहना पसंद करते हैं। क्योंकि सोशल साइट्स पर ही उनकी एक अलग दुनिया बन गई है जिससे परिवार बिखरने लगे हैं।
- इंटरनेट पर तरह-तरह की जानकारियां उपलब्ध रहती हैं जो अगर बच्चे देख, सुन और पढ़ ले तो उनके लिए हानिकारक हो सकते हैं।
- आजकल प्रत्येक व्यक्ति के पर्सनल और प्रोफेशनल दस्तावेज इंटरनेट पर सेव रहते हैं, इसलिए इनके चोरी होने का खतरा भी बना रहता है क्योंकि इंटरनेट पर कई प्रकार की गलतियाँ होती रहती हैं जिससे या तो पासवर्ड लीक हो जाता है या फिर कंप्यूटर विशेषक द्वारा आपका कंप्यूटर हैक करके जानकारी दे दी जाती है, जिससे आपका भविष्य खराब हो सकता है।
- इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभाव भी होने लगते हैं इसलिए हमेशा इंटरनेट को जरूरत के अनुसार इस्तेमाल करना चाहिए।
- वर्तमान में ज्यादातर बच्चे और युवा लोग इंटरनेट पर ही समय व्यतीत करते हैं। आप अपने आसपास नजर घुमा कर देखिए बस स्टैंड पर दुकान पर घर पर खेल के मैदान में सभी जगह लोग मोबाइलों में इंटरनेट चलाते दिख जाएँगे। इससे उनका जरूरी कार्य रूक जाता है और समय का दुरुपयोग होता है।
- इंटरनेट का अत्यधिक इस्तेमाल करने से बच्चों में चिड़चिड़ापन होने लग जाता है क्योंकि इंटरनेट पर कई हिंसक गेम, वीडियो इत्यादि सामग्री उपलब्ध है जोकि चिड़चिड़ापना को बढ़ावा देती है।

- इंटरनेट के माध्यम से कई गैर-कानूनी विधियां की जाती हैं जैसे गैर कानूनी माल की सप्लाई के लिए जानकारी देना, आतंकवादी गतिविधियों बढ़ाने के लिए आतंकवादी इंटरनेट का इस्तेमाल ही करते हैं और भी अनेक कार्य हैं जो कि गैर-कानूनी हैं और इंटरनेट पर छुपा कर किए जाते हैं।

इंटरनेट के कारण दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को इससे लाभ पहुंचा है, लेकिन आज भी हमारे देश के कई ऐसे स्थान हैं जहाँ पर इंटरनेट पहुँच नहीं पाया है।

इंटरनेट विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है। इंटरनेट का उपयोग अगर सही काम के लिए किया जाए तो यह बहुत ही अच्छा है। लेकिन इसका दुरुपयोग किया जाए तो इसके बहुत गंभीर परिणाम हो सकते हैं इसलिए इंटरनेट को हमेशा सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करना चाहिए। वास्तव में इंटरनेट ने मानव इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है।



कल्याण एवं खेलखूद की गतिविधियाँ

हमारे कार्यालय के कर्मचारियों ने अप्रैल 2019 से मार्च 2020 के दौरान आयोजित कई तरह के खेलों में यथा, क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, हॉकी, टेबल टेनिस, एवं ब्रिड्ज में काफी उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उनमें से क्रिकेट खेल में, श्री के. केसवन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, श्री एम.युवराज, वलेप, श्री ए.सी. प्रतिबन, वलेप, श्री एस.दिनेश, वलेप, श्री ए.अश्वत, लेप, श्री के.विग्णेश, लेप एवं समस्त ए जी ओ आर सी टीम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। क्रिकेट खेल में विशेष प्रतिभागिता देकर कार्यालय को ख्याति लाने वाले सभी प्रतिभागियों को कार्यालय की तरफ से हार्दिक बधाइयाँ। फुटबॉल मैच में हमारे विभाग/कार्यालय की तरफ से भाग लेकर एवं जीतकर, भा.ले.ले.प के मान बढ़ाने में विशेष योगदान देने वाले श्री ए. रीगन, वलेप, श्री वी.एडविन लूइस, पर्यवेक्षक, श्री विक्रम पटिल विश्वास, वलेप, श्री आर.नवीन कुमार, वलेप, श्री ए.शेरिन, वलेप, श्री एस.सम्सन राज, लेप एवं समस्त फुटबॉल टीम को कार्यालय की तरफ से हार्दिक बधाइयाँ।

बैडमिंटन के क्षेत्र में हमारे कार्यालय के श्री टी. मारन, वरि. लेखापरीक्षक को कार्यालय की तरफ से विशेष बधाइयाँ देते हुए यह उल्लेख किया जाता है कि उन्होंने कोच के रूप में कार्यभार ग्रहण कर, भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हमारा सम्मान बढ़ाया।

ए जी ओ आर सी हॉकी टीम एवं श्री आर.गोविंदराजन, वलेप, श्री सी. मणिवण्णन, वलेप, श्री एस.दिनेश, लेप को राष्ट्रीय स्तर पर मैच में भाग लेने के लिए हार्दिक बधाइयाँ । टेबल टेनिस खेल में श्री के. श्रीवत्सा चक्रवर्ती, वरि. लेखापरीक्षक एवं ए जी ओ आर सी टीम को हार्दिक बधाइयाँ। ब्रिड्ज खेल में श्री. एम.श्रीधर, वरि. लेखापरीक्षक को कार्यालय की तरफ से हार्दिक बधाइयाँ।

खेल के अलावा कल्याण अनुभाग द्वारा कार्यालय के पदधारियों के लिए विशेष कैंप/कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जो निम्नांकित हैं-

क्र.सं.	दिनांक	उपलब्धियाँ
1.	21.5.2019	आतंकवाद विरोध दिवस पर प्र नि लेप(केंद्रीय) द्वारा शपथ दिलाया गया ।
2.	29.05.2019	कार्यालय में डेंगू और स्वैन फ्लू पर स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान की व्यवस्था की गई ।
3.	11.6.2019 12.6.2019	व डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, चेन्नै की सहायता से निः शुल्क नेत्र जागरूकता शिविर की व्यवस्था की गई।
4.	21.06.2019	मुख्यालय के निर्देशानुसार, 5वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया और श्रीमती लता सुंदर, वलेपअ द्वारा व्याख्यान एवं प्रदर्शन किया गया।
5.	20.08.2019	सद्भावना दिवस / मले(आ एवं रा क्षे लेप) ने शपथ दिलाई
6.	31.10.2019	राष्ट्रीय एकता दिवस/ म नि लेप (केंद्रीय) ने शपथ दिलाई
7.	23.01.2020 24.01.2020	व भारत के जीवन भीमा निगम द्वारा शिकायत निवारण कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।
8.	13.02.2020	नेत्र सुरक्षा और जागरूकता पर व्याख्यान डी आर आर नेत्र अस्पताल, चेन्नई से डॉ. प्रीति उदय द्वारा दिया गया ।
9.	11.03.2020	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन में डॉ.सारधा श्रीनिवास, बाल चिकित्सा और बाल स्वास्थ्य के रायल कॉलेज ने विशेष भाषण दिया ।
10.	मार्च व अप्रैल 2020	कल्याण कक्ष ने तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच कोविड(COVID)19 पर जागरूकता पैदा करने में हैंड सैनिटाइज़र और फेस मास्क प्रदान करके का. प्र अनुभाग की सहायता की ।
11.	अप्रैल 2019 से मार्च 2020	अवधि के दौरान अधिवर्षिता / स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर 22 पदधारी सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे ।



महालेखाकार (ले.प - II) हिंदी दिवस समारोह 2019 के शुभारंभ पर दीप प्रज्वलित करते हुए



हिंदी दिवस समारोह 2019 का आनंद उठाते हुए कर्मचारीगण

